दुनिया में सिर्फ मां-बाप ही ऐसे हैं, जो बिना कोई स्वार्थ के प्यार करैं।

बिरज भासा की उन्नति और विकास

लाड़ली पतरिका

अक्टूबर ते दिसम्बर 2022

nirmaan

लोकगीत

अरी होली में हो गया झगड़ा,
सखियों ने मोहन को पकड़ा ।

धावा बोल दिया गिरधारी
नन्द गाँव के ग्वाले भारी
तक-तक मार रहे पिचकारी
आँख बचाकर कुछ सखियों ने,
झट से मोहन पकड़ा ॥

अरी होली में हो गया झगड़ा,
सखियों ने मोहन को पकड़ा ।

सखियों के संग भानुदुलारी
ले गुलाल की मुट्ठी भारी
मार रहीं हो गई अँधियारी
दीखे कुछ नहीं तब भी,
सखियों ने मोहन को पकड़ा ॥

अरी होली में हो गया झगड़ा,
सखियों ने मोहन को पकड़ा ।

सखा-भेष सखियों ने धारा
सब ने मिल के बादल फाड़ा
जाय अचानक फंदा डाला
छैला को कस कर जकड़ा,
सखियों ने मोहन पकड़ा ॥

अरी होली में हो गया झगड़ा,
सखियों ने मोहन को पकड़ा ।

सुवविचार

- जन्मों-जन्मों के टूटे रिस्ते भी जुड़ जामै बस सामने बारे को हम ते काम परनौ चहियै।
- या तरह ते अपनौ व्यवहार रखनौ चहियै कि अगर कोई तुम्हारे बारे में बुरा भी कहबै, तौ कोई भी बा बात पै विस्वास ना करै।
- अपनी कामयाबी कौ रौब माता पिता ऐ मत दिखाओ, उन्नै अपनी जिंदगी हार कैं हमको जिताया है।
- या दुनिया में कोई काई कौ साथी ना हैबै, लास को मरैठा में रखकर अपने लोग ही पुछते हैं और कितना वक्त लगैगौ।
- दुनिया के दो असम्भव काम- मां की “ममता” और पिता की “छमता” कौ अंदाज़ा लगा पाना।

भजन

टेक- डोकरा कूं ना रही ठौर खटोला कूं सुन लै बंसी बारे

1. बडौ छोरा यौं उठ बोलौ काका की खाट बिछा देऔ कमरा में सुन लै बंसी बारे
बडी बहू यों उठ बोली मेरौ नाज भरेगौ कमरा में
डोकरा कूं ना रही ठौर खटोला कूं सुन लै बंसी बारे

2. दूजौ छोरा यौं उठ बोलौ काका की
खाट बिछा देऔ पौरी में सुन लै बंसी बारे
दूजी बहू यौं उठ बोली मेरी भैंस बधंग्गी पौरी में
डोकरा कूं ना रही ठौर खटोला कूं सुन लै बंसी बारे

3. तीजौ छोरा यौं उठ बोलौ काका की
खाट बिछा देऔ कोठे में सुन लै बंसी बारे
तीजी बहू यौं उठ बोली मेरी खाट बिछैगी कोठे में
डोकरा कूं ना रही ठौर खटोला कूं सुन लै बंसी बारे

4. चौथौ बेटा यौं उठ बोलौ काका की
खाट बिछादेऔ आंगन में सुन लै बंसी बारे
चौथी बहू वाकी यौं उठ बोली मेरे बालक खेलैं आंगन में
डोकरा कूं ना रही ठौर खटोला कूं सुन लै बंसी बारे

5. पांची बहू यौं उठ बोली काका की
खाट बिछादेऔ दगरे में,
नाती की बहू ऐसी आई तुमनै दुनिया थूकै चौरे में

दोहा

1.राधा मेरी मात है, पिता मेरे घनस्याम।
इन दोनों के चरन में मेरौ वारमवार पिरनाम।।

अर्थ- राधा मेरी माता है, पिता मेरे घनश्याम भगवान हैं। मैं इन दिंने के चरणों में मेरा बार- बार शीश हमेशा झुकता रहे।

2.बुरौ जो देखबे मैं चलौ, बुरौ न मिलौ कोई।
जो भी दिल खोजौ अपनौ, मोय ते बुरौ न कोई॥

अर्थ - जब मैंने इस संसार में बुराई को ढूंढा तब मुझे कोई भी बुरा नहीं मिला, जब मैंने खुद का विचार किया तो मुझसे बड़ी बुराई नहीं मिली, दूसरों में अच्छा बुरा देकने वाला व्यक्ति सदैव खुद को नहीं जानता जो दूसरों में बुराई ढूंढते हैं वास्तव में वही सबसे बड़ी बुराई है।

निरमान सुसाइटी
सहारई रोड़, तहसील-डीग, जिला- भरतपुर, राजस्थान-321203
मोबाईल नं. 8696208682
बेबसाइट:
www.brajbhasha.org.in,
www.nirmaan.org.in
ई-मेल:
rajasthanlanguages@nirmaan.org.in , info@nirmaan.org.in